



# कृषि वाहिनी

कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा, नई दिल्ली  
(राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान)



अंक/खण्ड 36

जुलाई-दिसम्बर, 2018

संरक्षक  
डॉ. विजेन्द्र सिंह  
अध्यक्ष,  
एन.एच.आर.डी.एफ.  
दिल्ली

निदेशक (कार्यकारी)  
डॉ. पी. के. गुप्ता

मार्गदर्शक  
डॉ. एस. के. सिंह  
निदेशक  
आई.सी.ए.आर.-अटारी  
जोन-II  
जोधपुर (राज.)

मुख्य संम्पादक  
डॉ. पी. के. गुप्ता  
कार्यक्रम समन्वयक

सम्पादक मण्डल  
श्री कैलाश  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि प्रसार)  
श्री राकेश कुमार  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (बागवानी)

श्रीमती रितू सिंह  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृहविज्ञान)  
डॉ देवेन्द्र कुमार राणा  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पादक सुरक्षा)

डॉ समर पाल सिंह  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (सत्य विज्ञान)

श्री बृजेश यादव  
कार्यक्रम सहायक (मृदा)

## सम्पादकीय

### आधुनिक कृषि क्षेत्र का नया स्वरूप किसान उत्पादक संगठन

हमारे देश की आर्थिक अर्थव्यवस्था में कृषि का अतुलनीय योगदान रहा है। लेकिन हमारे देश की बढ़ती जनसंख्या एवं घटता हुआ कृषि जोत चिंताजनक स्थिति है। वर्तमान में हमारे देश में लगभग 80% किसान लघु एवं सीमांत वर्ग (1-2 हैं) इसलिए कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने कंपनी अधिनियम 1956 के तहत किसानों को 'किसान उत्पादक संगठन' बनाकर खेती करने पर जागरूक कर रही है। वर्तमान में हमारे देश में लगभग 500 किसान उत्पादक संगठन काम कर रहे हैं। जो सरकार अगले दो वर्षों में किसान समूह, किसान क्लब व स्वयं सहायता समूह को पंजीकृत 'किसान उत्पादक संगठन' में परिवर्तित करके एक संस्थानिक स्वरूप देने का निर्णय किया है एवं साथ में 5000 नये किसान उत्पादक संगठन बनाने पर जोर दे रही है।



किसान उत्पादक संगठन का अर्थ यह है कि लघु व सीमांत वर्ग के किसान एक सामूहिक संगठन बनाकर उत्पाद का उत्पादन करे ताकि कृषि से जुड़ी अनेक चुनौतियों का सामना करके, नयी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके, निवेश करके एवं अपने उत्पाद की बाजार तक पहुँच आसान व प्रभावी बना सके। जिससे वे अपने उत्पाद व विपणन क्षमता का सामूहिक रूप से बढ़ावा देकर लाभ उठा सकें। किसान उत्पादक संगठन नाबाड़, सरकारी सहायता, एवं लघु कृषक कृषि व्यापार संघ की वित्तीय, संरचना एवं मार्गदर्शन में बनाया जाता है जिसमें कम से कम 10 किसानों की आवश्यकता होती है। जिससे वे एक सामूहिक कम्पनी व संगठन बना सके। किसान यह उत्पादक संगठन बनाकर बाजार की मांग के आधार पर एवं आवश्यकतानुसार उत्पादन करके अपने उत्पाद को सीधे बाजार, मंडी, होटलों व थोक बाजार में बेच सकते हैं जिससे वे अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

किसान उत्पादक संगठन वर्तमान में समय कि मांग है क्योंकि लघु व सीमांत वर्ग के किसान अधिक मेहनत व लगन से उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन बाजार में ले जाने का खर्चा, खाद -बीज लाने का खर्चा, कम-उत्पाद का मुल्य संवर्धन करके भी ना बेच पाना, कीटनाशिकों व फंफुदनाशियों को लेने का खर्चा आदि होने के कारण किसान अपने उत्पाद की कीमत कम के साथ खर्चा का वजन भी उठाना पड़ता है जिससे वे खेती से अपना मुँह मोह ले रहे हैं।

लेकिन किसान उत्पादक संगठन ऐसा सामूहिक समूह है जो किसानों की खेती की लागत तो कम करते हुए वर्तमान में आधुनिक व वैज्ञानिक तरीके से खेती करने पर भी अग्रसर करता है इस समूह के माध्यम से अग्रणी किसान से किसान मॉडल के तहत कृषि की जानकारी एवं तकनीकी हस्तांतरण भी जल्दी अग्रसर होती है जिससे किसान एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं एवं जागरूकता भी अधिक आती है।

किसान उत्पादक संगठन से किसान कम लागत में व बिना वित्तीय सहायता से उस तकनीकी व उत्पादन वाली खेती कर सकते हैं तो इसमें जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञ, विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ एवं राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी लगातार जुड़े रहते हैं एवं उच्च उत्पादन वाली तकनीकी का हस्तांतरण करते रहते हैं।



## अठारहवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली के परिसर में अठारहवीं कृषि वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन 28 दिसम्बर, 2018 का किया गया। जिसकी अध्यक्षता डा. आर. पी. गुप्ता, सलाहकार (MIDH), कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने की एवं उन्होंने उपस्थित समिति के सभी सदस्यों का अभिवादन किया। उन्होंने बताया कि वर्तमान व भविष्य की बाजार की माँग व ग्राहकों की माँग पर खेती करने में ही मुनाफा है। उन्होंने कहा कि कृषि

विज्ञान केन्द्र, उजवा, दिल्ली यहाँ की खेती में विविधीकरण लाकर उधमीशीलता, सब्जियों उत्पादन, फुलों के उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन, मछलीपालन व मधुमक्खी पालन में उधमी तैयार करके व्यावसायिक मुनाफा वाली खेती की तरफ अग्रसर करना चाहिए। एवं युवाओं को खेती की तरफ आकर्षित करके प्रशिक्षण के द्वारा उनकी कौशल एवं क्षमता का विकास करना चाहिए। कार्यक्रम के शुरुआत में संस्था के कार्यक्रम समन्वयक डा. पी. के. गुप्ता ने 17वीं समिति के द्वारा सुझायें गये कार्यों की प्रस्तुती दी एवं आगामी वर्ष में होने वाले कार्य योजना को क्रमवार प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में क्रम वार सभी विषय विशेषज्ञों ने अपनी प्रगति रिपोर्ट व आगामी कार्यों की योजना प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अन्त में कार्यक्रम समन्वयक ने समिति के सभी सदस्यों की बैठक में भाग लेने पर व सदस्यों द्वारा दिये गये सुझावों के लिए धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम में डा. नीरसी शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार (CATAT), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, एवं दिल्ली सरकार के बागवानी विभाग, पशुपालन विभाग व नाबार्ड बैंक के सदस्य, डी डी किसान व आकाशवानी के सदस्य एवं प्रगतिशील किसान व महिला किसानों ने भाग लिया।

### व्यावसायिक प्रशिक्षण

#### (1) लैण्डस्केपिंग एवं गार्डनिंग विषय पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, के द्वारा इस बार की सात दिन का व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन देश की रक्षा करने वाले CRPF के कार्यरत एवं सेवानिवृत जवानों के सी. आर. पी. एफ (CRPF) कैप झड़ौदा कला में दिनांक 04 से 10 सितम्बर, 2018 तक किया गया। जिसका उदघाटन श्री मेघराज, (कमांडेन्ट), सी.आर.पी. कैप ने किया एवं उन्होंने संबोधित करते हुए बताया कि बागवानी कला के माध्यम से अपने 1 सिग्नल पार्क केरिपुबल परिसर की सुन्दरता के साथ-साथ, सेवानिवृति के पश्चात् स्वयं की व्यवसायिक बागवानी की ईकाई स्थापित कर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण का संचालन श्री राकेश कुमार (बागवानी विशेषज्ञ) कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के प्रयोगशाला में किया गया। इस में बागवानी से उच्च तकनीकी द्वारा नर्सरी उत्पादन करना, पौधों का प्रवर्धन, नये गार्डन का निर्माण, लॉन को तैयार करने की तरीका, इनडॉर व आउटडॉर पौधे तैयार करना, कीट-बीमारियों का प्रबन्धन आदि का विस्तृत रूप से विवरण दिया गया। इस प्रशिक्षण में कार्यरत व सेवानिवृत कुल 25 कर्मियों ने भाग लिया। जिनका मुल्यांकन करके प्रमाण पत्र दिये गये।



#### (2) खाद्य प्रसंस्करण पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के द्वारा दिनांक 12/11/2018 से 24/11/2018 तक "खाद्य प्रसंस्करण" विषय पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन कृ.वि.के. के परिसर में किया गया। जिसमें इस व्यावसायिक प्रशिक्षण का संचालन श्रीमती रितु सिंह, विशेषज्ञ गृह विज्ञान ने किया जिसमें दिल्ली देहात के आस-पास के 22 पुरुष एवं महिला किसानों ने भाग लिया जिसमें श्रीमती सिंह ने महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण विधियों का विधि प्रदर्शन करके प्रशिक्षण दिया जैसे नमक से परिरक्षण (अचार, चटनी), 2 ग्राम चीनी से परिरक्षण (मुरबा एवं शर्बत) रसायनों के द्वारा (टमाटर कैचेप सिरका) का परिरक्षण सुखाने से विधियों की विस्तृत रूप से जानकारी दी। इसमें प्रशिक्षिकों को कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा तैयार उधमियों की ईकाई पर भी भ्रमण किया। जिससे महिला व पुरुष प्रशिक्षित सफल उधमियों से प्रभावित होकर अपने उधमी की शुरुआत कर सकें।



### (3) मशरूम उत्पादन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के तत्वाधान मे झाड़ौदा कला मे स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल परिसर में दिनांक 01/10/2018 से 10/10/2018 को मशरूम उत्पादन विषय पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन श्री मेघ राज, (कमांडेन्ट) केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने किया उन्होने संबोधित करते हुए कहा कि आप सेवानिवृति के बाद मशरूम उत्पादन करके अपने जीविका चला सकते हैं। इस प्रशिक्षण का संचालन डा. देवेन्द्र राणा, विशेषज्ञ, पादप सुरक्षा व मशरूम उत्पादन ने प्रशिक्षिकों को विधि प्रदर्शन के द्वारा प्रशिक्षण देकर विस्तार से जानकारी साझा की। डा. राणा ने प्रशिक्षिकों को प्रथम दिन से कम्पोस्ट तैयार करके अन्त तक मशरूम उत्पादन की विस्तृत प्रायोगिक एवं सैद्वान्तिक जानकारी दी एवं प्रशिक्षिकों के साथ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मे एक मशरूम उत्पादन इकाई भी स्थापित की एवं सप्ताह मे दो बार मशरूम खाने की सलाह दी ताकि उसमे उपस्थित 65% प्रोटीन एवं 90% पानी की पुरी मात्रा शरीर को मिल सके जो बहुत आवश्यक है। इस कार्यक्रम मे कार्यरत व सेवानिवृत 25 कृमियों ने भाग लिया इस प्रशिक्षण के पश्चात उनका मुल्यांकन करके प्रमाण पत्र दिये गये।



### किसान-वैज्ञानिक संवाद

#### (1) फसल अवशेष प्रबंधन पर किसान-वैज्ञानिक संवाद

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा मे भारत सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना “फसल अवशेष का स्व-स्थान प्रबंधन” के तहत किसान-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन दिनांक 28 अगस्त 2018 को किया गया। जिसके मुख्य अतिथि माननीय डा. हर्ष वर्धन, केन्द्रीय मंत्री (विज्ञान, पर्यावरण पृथकी, वन एवं प्रौद्योगिकी) भारत सरकार, ने की एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. बिजेन्द्र सिंह (पूर्व विधायक), अध्यक्ष राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, जनकपुरी, नई दिल्ली ने की। कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक डा. पी. के. गुप्ता ने आये हुए अतिथियों एवं किसानों का स्वागत किया एवं उनको संबोधित करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दिल्ली को प्रदूषण से मुक्त करना है इसके लिए यह संस्था बेखुबी भूमिका निभा रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय मंत्री डा. हर्षवर्धन जी ने किसानों को संबोधित करते हुए वर्तमान मे चल रही सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान उन्होने किसानों को कहा कि फसल अवशेषों को जलाने के बजाय उनका प्रबंधन करना चाहिए एवं खाद बनाकर मृदा की उर्वरता शक्ति बढ़ानी चाहिए। उन्होने अपने संबोधन में मन्त्रालय में किसानों के लिए चलाई जा रही योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि अभी देश मे करीब 9.3 करोड़ किसानों को मौसम संबंधित जानकारी सीधे संदेश द्वारा मोबाइल पर दी जा रही है। उन्होने कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं को कहा कि आप कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त करके अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सकते हैं एवं उन्होंने कृ. वि. के. के द्वारा प्रशिक्षित श्रीमती कृष्णा यादव, महिला उधमी का उदाहरण भी दिया। इस कार्यक्रम मे डा. रणधीर सिंह, सहायक उपमहानिदेशक, (कृषि प्रसार) भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, श्री पी. एस. सैनी, संयुक्त निदेशक, दिल्ली सरकार एवं नजफगढ़ काउंसलर सुमन डागर सहित प्रगतिशील किसान, एवं महिला किसानों ने भाग लिया। कृ. वि. के. प्रशिक्षित उधमियों ने प्रदर्शनी लगाकर किसानों को विस्तृत जानकारी दी।



## (2) फसल अवशेष प्रबंधन पर द्वितीय किसान-वैज्ञानिक संवाद

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के द्वारा “फसल अवशेष का स्व स्थान प्रबंधन परियोजना के अन्तर्गत द्वितीय “किसान-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन दिनांक 11 अक्टुबर, 2018 को तिगिपुर गांव मे (अलीपुर ब्लाक) मे आयोजित किया। जिसके मुख्य अतिथि श्री अश्वनी कुमार, संयुक्त सचिव (मशीन व उपकरण), कृषि सहकारिता व किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने की। कार्यक्रम के शुरुआत मे डा. पी. के. गुप्ता, कार्यक्रम समन्वयक (कृ.वि.के.)ने अतिथि व किसानों का स्वागत किया एवं किसानों को फसल अवशेष ना जलाकर मशीनों द्वारा मिटटी मे मिलाने के लिए निवेदन किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कुमार ने किसानों को मशीनों द्वारा पराली प्रबंधन, पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभाव, भूमि मे होने वाले नुकसान आदि के बारे मे विस्तृत चर्चा की एवं दिल्ली, पंजाब, हरियाणा व उत्तरप्रदेश मे चलने वाली फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अन्तर्गत कृषि मशीनों के अनुदान के बारे मे किसानों को जानकारी दी। एवं काफी किसानों के योजना से जुड़े हुए प्रश्नों के उत्तर भी दिये। इस कार्यक्रम के क्रम मे डा. रणधीर सिंह, सहायक उप महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने अपने विचार रखे एवं संस्थान द्वारा चलाई जारी योजनाओं के बारे मे किसानों को विस्तृत जानकारी दी एवं डा. इन्द्रमणी, अध्यक्ष, कृषि अभियांत्रिकी विभाग भा. कृ. अन. से पूसा, नई दिल्ली ने भी मशीनों के रखरखाव व उपयोग करने के बारे किसानों के साथ जानकारी साझा की। इसी क्रम मे पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना (पंजाब) डा. अपूर्व प्रकाश, इंजीनियर, कृषि अभियांत्रिकी विभाग पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने धान की फसल को प्रबंधन करने वाली मशीनों की विस्तृत जानकारी साझा की। इस कार्यक्रम मे दिल्ली देहात के विभिन्न गांवों के 450 किसानों, दिल्ली व भारत सरकार के अधिकारियों ने भाग लिया।



### प्रायोजित प्रशिक्षण

## (1) माली विषय पर कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन:

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा नई दिल्ली द्वारा प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत 200 घंटे अवधि का माली कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 18 दिसम्बर 2018 से 08 जनवरी 2019 को कृ.वि.के. के परिसर मे किया गया जिसका संचालन श्री राकेश कुमार, विशेषज्ञ (बागवानी) ने किया। इसमे 20 प्रशिक्षिकों ने माली का प्रशिक्षण लिया। इस प्रशिक्षण मे प्रशिक्षिकों को बागवानी की उच्च तकनीकी, नर्सरी उत्पादन, पौधों का प्रवर्धन, नये गार्डन का निर्माण लॉन तैयार करने के तरीका, इनडोर एवं आउटडोर पौधे तैयार करना एवं कीट बीमारियों का प्रबंधन आदि के बारे मे सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रदर्शन के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया एवं प्रशिक्षण के बाद उनका भारत के कृषि कौशल परिषद द्वारा ऑनलाइन मुल्यांकन करके सफल अभ्यार्थियों को प्रमाण-पत्र दिया गया।



## (2) फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा दिल्ली के द्वारा भारत सरकार की “फसल अवशेष का स्व-स्थान प्रबंधन” परियोजना के अन्तर्गत कृ. वि. के. परिसर मे दिनांक 27 सितम्बर से 01 अक्टुबर 2018 को किया गया। जिसमें दिल्ली देहात के धान वाले क्षेत्र (गुमनहेरा, गालिबपुर सारंगपुर, दाँसा, रावता एवं झुलझुली के लगभग 90 किसानों ने 5 दिन तक वीडियो, फिल्मो, सफल किसानों की कहानियों एवं विधि प्रदर्शन से फसल अवशेष प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी। किसानों की मशीनों के द्वारा विधि प्रदर्शन करवाकर फसल अवशेष को मिट्टी मे मिलाने की विस्तृत जानकारी दी। ताकि किसान कम्बाईन से धान की कटाई के बाद फसल को जलाये नहीं।



### (3) फसल अवशेष का स्व-स्थान प्रबन्धन के लिए फार्म मशीनरी पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा दिल्ली के द्वारा फसल अवशेष "ख-स्थान" प्रबन्धन योजना के अन्तर्गत गोद लिए गाँव गालीबपुर, सारंगपुर, गुमनहेड़ा किसानों के लिए 5 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 23 से 27 अक्टूबर, 2018 को किया गया। जिसमें आस-पास के धान वाले क्षेत्र के लगभग 100 किसानों ने भाग लिया। जिनको मशीन मल्वर एवं शर्ब मास्टर से धान की फसल के अवशेषों को मिट्टी में मिलाने का विधि प्रदर्शन करवाकर प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों ने प्रतिज्ञा ली कि हम धान के अवशेषों को जलाये बिना पशुओं के चारे, कम्पोस्ट उत्पादन व मिट्टी में मिलाकर उसकी उर्वरता शक्ति बढ़ाएंगे।

### प्रसार गतिविधियाँ

#### (1) प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए कम लागत एवं पोषक तत्वों का पोषण पर प्रशिक्षण का आयोजन:

कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली के द्वारा दिल्ली सरकार के प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए "कम लागत एवं पोषक तत्वों का पोषण" के लिए प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 24 से 25 अक्टूबर 2018 को किया गया। जिसमें श्रीमती रितु सिंह, गृह विज्ञान विशेषज्ञ ने खाद्य प्रसंस्करण, कम लागत में पौष्टिक व पोषण वाला भोजन तैयार करना, खाद्य पदार्थों को लम्बे समय तक प्रयोग के लिए प्रसंस्करण करने की विधि एवं खाद्य पदार्थों को घरेलु व रसायनिकों के द्वारा परिरक्षित करने के बारे में विधि सैद्वान्तिक एवं प्रायोगिक प्रदर्शन के द्वारा प्रशिक्षण दिया। जिसमें लगभग 25 प्रसार कार्यकर्ताओं ने विधि पूर्वक विस्तृत जानकारी हासिल की।



#### (2) किसान गोष्ठी : मूंग की फसल के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के लिए किसान गोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा ने भारत सरकार की राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत मूंग पर फसल पर कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगवाने व तकनीकी हस्तांतरण के लिए किसान गोष्ठी का आयोजन दिनांक 11 जुलाई 2018 को कृ. वि.के. परिसर में किया गया। जिसमें दिल्ली देहात के लगभग 24 किसानों के अलग-अलग कलस्टरों में मूंग की फसल लगाने के लिए प्रजाति (एम एच-421), राइजोबियम एवं खरपतवार नियन्त्रण के लिए पेन्डामेथालिन 30 ई.सी. किसानों को देकर एवं इसका सैद्वान्तिक एवं प्रायोगिक प्रदर्शन के द्वारा प्रयोग करने के बारे में भी बताया डा. समर पाल सिंह, विषय विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) ने मूंग की फसल की बुवाई की विधि, बीज उपचार, खरपतवार नियन्त्रण एवं खाद उर्वरक के प्रयोग करने के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डा. डी. के राणा (पादप सुरक्षा विशेषज्ञ) ने बीमारियों व कीटों के बचाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

#### (3) सरसों की फसल पर किसान गोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत सरसों की फसल पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन किसानों के प्रक्षेत्र पर लगवायी गयी जिसके लिए कृ.वि.के. के परिसर पर किसान गोष्ठी का आयोजन 15 अक्टूबर 2018 को किया गया जिसमें 106 किसानों ने भाग लिया। जिनको डा. समर पाल सिंह, विषय विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) ने सरसों की फसल की बुवाई, बोने की विधि बीज उपचार, खरपतवार नियन्त्रण एवं खाद उर्वरक के प्रयोग करने के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डा. डी. के राणा (पादप सुरक्षा विशेषज्ञ) ने बीमारियों व कीटों के बचाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी।



#### (4) चना की फसल पर किसान गोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत चने की फसल की अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के लिए किसान गोष्ठी का आयोजन 31 अक्टूबर, 2018 को कृ.वि.के. के परिसर में किया गया। जिसमें डा. समर पाल सिंह, विषय विशेषज्ञ (सर्स्य विज्ञान) ने चने की फसल की बुवाई की विधि, एवं दलहनी फसल लगाने से होने वाली मिट्टी उर्वरता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डा. डी. के राणा ने फसल के कीटों व बीमारियों से बचाने के लिए बीज उपचार व फॅफुदनाशियों के प्रयोग के बारे में जानकारी साझा की। इस कार्यक्रम में 33 किसानों ने भाग लिया।



#### प्रक्षेत्र दिवस

##### (1) मूँग की फसल पर प्रक्षेत्र दिवस

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा ने दलहनी फसल के उत्पादन में बढ़ोत्तरी एवं पोषण भोजन की पूर्ति के लिए अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मूँग की फसल अलग-अलग कलस्टरों में लगवायी गयी। जिसके लिए संस्था द्वारा काजीपुर गांव में मूँग की फसल पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन 20 सितम्बर 2018 को किया गया। जिसमें डा. समर पाल सिंह ने किसानों को मूँग की फसल का भ्रमण करवाकर उसकी तकनीकी हस्तांतरण करके व मृदा उर्वरता में बढ़ोत्तरी की विस्तृत जानकारी साझा की। इस कार्यक्रम में 40 से अधिक किसानों ने मूँग की वैज्ञानिक उत्पादन के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।



##### (2) खरीफ प्याज पर प्रक्षेत्र दिवस



कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के तत्वाधान में खरीफ मौसम में एकीकृत बागवानी विकास मिशन के अन्तर्गत खरीफ प्याज की फसल पर जाफरपुर कलाँ गांव में 31 दिसम्बर 2018 को प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया। जिसमें बागवानी विशेषज्ञ श्री राकेश कुमार ने प्याज की नई किस्म (ADR) व बेमौसम में प्याज की खेती करने की वैज्ञानिक तकनीकी के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं श्री कैलाश जाखड़, विषय विशेषज्ञ (कृषि प्रसार) ने किसानों को बाजार की मँग पर आधारित खेती व किसान कलब बनाकर खेती करने के लिए आग्रह किया। इस कार्यक्रम में लगभग 25 किसानों ने प्याज की खेती की प्रदर्शनी के द्वारा तकनीकी जानकारी प्राप्त की।

##### (3) जागरूकता अभियान :- गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह

कृषि विज्ञान केन्द्र के कृषि प्रसार इकाई के द्वारा दिनांक 16 से 22 अगस्त 2018 तक पार्थनियम उन्मूलन जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया जिससे डा. समर पाल सिंह, विशेषज्ञ (सर्स्य विज्ञान), श्री कैलाश जाखड़, विशेषज्ञ (कृषि प्रसार) एवं श्रीमति रितु सिंह, विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) ने अलग-अलग गाँवों (उजवा, गुमनहेड़ा, समसपुर एवं तिगीपुर) में किसानों व विद्यालयों में बच्चों को गाजरघास के बारे में जागरूक किया जिसमें उन्होंने पार्थनियम से मनुष्यों, पशुओं व कृषि में होने वाली समस्याओं खेत पर पार्थनियम व मैक्सिकन बीटल की पहचान व इसके उन्मूलन व प्रबंधन के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर अलग अलग जगह जागरूकता अभियान चला कर 60 कृषकों, ग्रामीण युवाओं एवं महिलाओं को जागरूक किया।



#### प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र तकनीकी जांच

कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली के द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत फसलों की उच्च व गुणवत्ता उत्पादन एवं दलहनी व तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों के प्रक्षेत्र पर कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के द्वारा तकनीकी हस्तांतरण के अंतर्गत मूँग के फसल (एम एच-421 प्रजाति) का प्रदर्शन लगवाया गया। जो एक एकड़ (0.4 है) प्रति प्रक्षेत्र के हिसाब से 10 हैक्टर में 25 किसानों के प्रक्षेत्रों पर प्रदर्शनों का आयोजन किया। एवं रबी मौसम में दलहनी फसल में चना (जी.एन.जी.-1958 प्रजाति) का 13.6 हैक्टर, में 34 कृषकों व तिलहनी फसल सरसों (गिरिराज व आर.एस.-749) का 106 कृषकों के 42.4 हैक्टर एवं गेहूँ फसल (एच. डी. 3086 प्रजाति) का 7.0 हैक्टर में 17 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन किया गया। जिसमें किसानों को फसल उत्पादन की उच्च तकनीकी की जानकारी लगातार किसान-वैज्ञानिक संवाद, प्रक्षेत्र भ्रमण, प्रशिक्षण, प्रक्षेत्र दिवस, परिमाण प्रदर्शन एवं मीडिया

(पत्रिका) के द्वारा विस्तृत जानकारी दी गई। जो उस क्षेत्र मे कृषि उत्पादन व वैज्ञानिक तरीके से खेती करने मे नये आयाम प्रदान करेगी ताकि यह तकनीकी किसान से किसान मॉडल के माध्यम से अधिक से अधिक कृषकों के पास पहुंचे जिससे किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचा सकें।



## DELHI-ENVIRO QUEST - 2018

भारत सरकार के कृषि, सहकारिता एवं कृषि किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, के नई दिल्ली ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली को पर्यावरण के प्रदूषण से मुक्त करने के लिए दिल्ली, हरियाणा, पंजाब व नई दिल्ली मे कृषि मशीनीकरण के द्वारा “फसल अवशेषों का स्व-स्थान प्रबंधन” की महत्वाकांक्षी परियोजना प्रारम्भ की। जो 4 राज्यों व चयनित जिलो मे स्थित 60 कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों को प्रदर्शन प्रशिक्षण, जागरूकता व कार्यक्रमों आदि के माध्यमों से मशीनों के द्वारा धान की कटाई के बाद बचे हुए फसल अवशेषों को भूमि मे मिलाना, फसल अवशेषों को जलाये बिना उनका प्रबंधन करके मिट्टी की उर्वरता क्षमता बढ़ाये जिससे पर्यावरण प्रदूषण से राहत मिल सके।

इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य किसानों को कार्यक्रमों, प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण के अलावा अपने स्कूल बच्चों को फसल अवशेष जलाने से होने वाले नुकसान व लाभ के बारे मे जागरूकता लाना। जिससे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में फसल अवशेष से होने वाले प्रदूषण को रोका जा सकें।

भारत सरकार की इसी परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र मे स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, नई दिल्ली ने डॉ. बिजेन्द्र सिंह, (पूर्व विधायक) व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान व विकास प्रतिष्ठान, जनकपुरी, नई दिल्ली डॉ. अशोक कुमार सिंह, उप महानिदेशक, (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं डॉ. सुशील कुमार सिंह, निदेशक, भारतीय तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2, जोधपुर के मार्गदर्शन मे श्री देवेन्द्र सिंह, निदेशक, शिक्षा भारती ग्लोबल स्कूल के सहयोग से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सम्पूर्ण विद्यालयों के लिए “Delhi -Enviro-Quest-2018” प्रतियोगिता का आयोजन 19 से 20 नवम्बर, 2018 को शिक्षा भारती ग्लोबल स्कूल, सेक्टर-8 द्वारका, नई दिल्ली मे किया गया।

जिसमें राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रों के केन्द्रीय विद्यालय (30), सरकारी विद्यालय (25) एवं पब्लिक विद्यालय (30) लगभग 85 विद्यालयों के 800 से अधिक विद्यार्थियों ने अलग-अलग प्रतियोगिता जैसे वाद-विवाद (Debate), तत्कालिक (Extempore), संदेश लेखन (Slogan Writing), चित्रकला (Poster Making) व जनरल नॉलेज प्रतियोगिता (General Knowledge Quiz) मे भाग लिया।

जिसमें प्रतियोगिता को दो भागों मे बांटा गया जो समूह ‘ए’ और समूह ‘बी’ था। वर्ग के विद्यार्थियों ने इस प्रकार भाग लिया।

क्र सं.	प्रतियोगिता	समूह-ए (6-8वीं वर्ग)	समूह-बी (9-10वीं वर्ग)
1	वाद-विवाद	75	79
2	तत्कालिक	60	58
3	संदेश लेखन	92	79
4	चित्रकला	103	90
5	जनरल नॉलेज	74	90
		404	396



कार्यक्रम के प्रथम दिन 19 नवम्बर, 2018 को समूह ए ( 6 से 8वीं) वर्ग की प्रतियोगिता में (जनरल नॉलेज को छोड़कर) 330 विद्यार्थियों ने अलग—अलग प्रतियोगिता में भाग लिया। कार्यक्रम के दुसरे दिन 20 नवम्बर 2018 को (वर्ग ए व वर्ग बी के जनरल नॉलेज) 470 विद्यार्थियों ने अलग—अलग प्रतियोगिता में बहुत ही उत्सुकता से भाग लिया।

### दिवस

### विश्व मधुमक्खी दिवस

कृषि विज्ञान केन्द्र, दिल्ली के परिसर में दिनांक 19 सितम्बर, 2018 को विश्व मधुमक्खी दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें डा. डी. के राणा, विषय विशेषज्ञ (पादप सुरक्षा) व मधुमक्खी विशेषज्ञ ने दिल्ली देहात के आस – पास क्षेत्र से आये किसानों को इटालियन मधुमक्खी पालन के बक्सो का विभाजन, शहद निष्कासन व मधुमक्खी के जीवन चक्र की विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यक्रम में आये हुए युवाओं को मधुमक्खी उद्यमिता से जुड़ने का आग्रह किया। एवं डा. समर पाल सिंह, विषय विशेषज्ञ (सर्स्य विज्ञान) ने बताया कि सरसों के फसल के साथ मधुमक्खी पालन करने पर 20–25% उत्पादन में वृद्धि होती है। इस कार्यक्रम में लगभग 44 किसानों ने भाग लिया।



### विश्व मृदा दिवस



कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा ने परिसर में 5 दिसम्बर, 2018 को विश्व मृदा दिवस का आयोजन किया। जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पुसा, नई दिल्ली के प्रधान वैज्ञानिक डा. वाई. वी. सिंह व डा. लवलीन शुक्ला ने विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। डा. पी. के गुप्ता, कार्यक्रम समन्वयक, कृ.वि.कै. ने आये हुए विशेषज्ञ व किसानों का स्वागत किया और विश्व मृदा दिवस मनाने के महत्व बारे में किसानों को जानकारी दी। इस कार्यक्रम के क्रम में भा. कृ. अ. सं. के विशेषज्ञ डा. वाई. वी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने किसानों को खाद उर्वरक के प्रयोग, पानी का उपयोग, मिट्टी जांच का महत्व व मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार खाद-उर्वरक के प्रयोग पर प्रकाश डाला एवं प्रधान वैज्ञानिक डा. लवलीन शुक्ला ने किसानों को जैविक खेती की तरफ अग्रसर होने के लिए आग्रह किया एवं उन्होंने किसानों को जैव विधि से बीज उपचार एवं मृदा अपघटक, वर्मी खाद एवं कम्पोस्ट का प्रयोग करने के बारे में जानकारी सांझा की। इस कार्यक्रम में 60 किसानों ने मृदा स्वास्थ्य के रखरखाव व सावधानी के बारे जानकारी प्राप्त की एवं संस्था के द्वारा 60 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किया गया।

### किसान दिवस - रबी किसान सम्मेलन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के द्वारा 23 दिसम्बर 2018 को भारत के पाँचवे प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की स्मृति में किसान दिवस व रबी किसान सम्मेलन का आयोजन कृ. वि. कै. परिसर में किया गया। जिसमें डा. वेद प्रकाश चहल, सहायक उप महानिदेशक, कृषि प्रसार विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए एवं साथ में डा. नावेद शाबिर, प्रधान वैज्ञानिक (पादप सुरक्षा), डा. ओम प्रकाश, वैज्ञानिक (कृषि प्रसार) एवं डा. बी. के. सिंह, पूर्व अध्यक्ष (CATAT) आदि विशेषज्ञ के रूप में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से उपस्थिती दर्ज की। जिसमें डा. चहल ने किसानों को पारम्परिक पद्धति से खेती से हटकर बाजार की माँग व उधमी को बढ़ावा देकर खेती करने के लिए आग्रह किया एवं उन्होंने किसानों को किसान उत्पादक संगठन (FPO), किसान क्लब एवं स्वयं सहायता समूह बनाने की सलाह दी। डा. चहल ने किसानों को खेती के साथ—साथ अलग—अलग व्यवसाय (पशुपालन, बकरी पालन, मुर्गीपालन एवं सब्जी उत्पादन) को जोड़कर खेती करने की सलाह दी। इस कार्यक्रम के क्रम में पादप सुरक्षा विशेषज्ञ डा. नावेद शाकिर (प्रधान वैज्ञानिक) ने पादप सुरक्षा एवं कीटों पर प्रकाश डालते हुए किसानों को बीमारियों व कीटों को नियन्त्रण के लिए तीन सिद्धान्तों का ध्यान रखना चाहिए सुझाव, निगरानी व बचाव। उन्होंने इसी पर बल देते हुए कहा कि आप बीमारियों व कीटों से फसलों का बचाव समेकित प्रबन्धन से करते—करते कीटनाशियों व फफुदनाशियों का प्रयोग भी कम करना चाहिए। उन्होंने किसानों को प्राकृतिक कीटों (मित्र कीटों) का बचाव करते हुए फसल की सुरक्षा करने की सलाह दी। इसी कार्यक्रम के क्रम में सभी विशेषज्ञों ने अपने—अपने सुझाव रखें। इस कार्यक्रम में 250 किसानों ने भाग लेकर रबी फसल की सुरक्षा की महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की।

**कृषि विज्ञान केन्द्र मे विशिष्ट अतिथि/आगन्तुको का भ्रमण:-**

क्र.सं.	आगन्तुक / विशेषज्ञ	संस्थान	दिनांक
1.	डा. एम. हसन, प्रधान वैज्ञानिक (अभियांत्रिकी)	कृषि अभियांत्रिकी विभाग भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पुसा नई दिल्ली	5 जुलाई, 2018
2.	डा. हर्ष वर्धन, केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार	विज्ञान, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार	28 अगस्त, 2018
3.	डा. रणधीर सिंह, सहायक उप—महानिदेशक (कृषि प्रसार )	कृषि प्रसार विभाग, भा कृ. अनु. प्र. नई दिल्ली	28 अगस्त, 2018
4.	श्रीमति मनीषा सक्सेना (DICOM), Revenue, GNCT, Delhi श्रीमति दलजीत कौर (DC), श्री अभिषेक देव (DC), श्रीमति भानु प्रभा (SDM), एवं कुमारी वदिता रेड़डी (SDM), GNCT, Delhi	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार	05 अक्टुबर, 2018
5.	श्री अश्विनी कुमार, IAS संयुक्त सचिव (मशीन एवं टुल)	कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार	11 अक्टुबर, 2018
6.	डा. सुशील कुमार सिंह, निदेशक	भारतीय कृषि अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर (राजस्थान)	30 अक्टुबर, 2018
7.	डा. वेद प्रकाश चहल, सहायक उप—महानिदेशक (कृषि प्रसार)	कृषि प्रसार विभाग भा. कृ. अनु. प्र. नई दिल्ली	23 दिसम्बर, 2018
8.	डा. नावेद शाबिर (प्रधान वैज्ञानिक), डा. ओम प्रकाश (वैज्ञानिक) एवं डा. बी. के. सिंह, पूर्व अध्यक्ष (CATAT)	भा. कृ. अनु. प्र., पुसा नई दिल्ली	23 दिसम्बर, 2018
9.	डा. आर. पी. गुप्ता, सलाहकार (MIDH)	कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार	28 दिसम्बर, 2018
10.	डा. हरि नारायण मीना (वरिष्ठ वैज्ञानिक)	भारतीय कृषि अनुप्रयोग संस्थान जोन-2 जोधपुर (राजस्थान)	28 व 29 दिसम्बर, 2018

**संचार (रेडियो एवं टेलीविजन) के माध्यम से जागरूकता:-**

क्र.सं.	विषय	चैनल	प्रसारण तिथि	विषय विशेषज्ञ
1.	मधुमक्खी पालन से बढ़ाये आमदनी	डी डी किसान	11 / 07 / 2018	पादप सुरक्षा
2.	फसल अवशेष प्रबन्धन पर चौपाल चर्चा	डी डी किसान	31 / 07 / 2018	कृषि प्रसार
3.	किसान प्रश्न मंच (सब्जी उत्पादन)	डी डी किसान	23 / 08 / 2018	बागवानी
4.	मधुमक्खी पालन से लाभ	डी डी किसान	25 / 08 / 2018	पादप सुरक्षा
5.	फसल अवशेष जलाने से नुकसान	एफ. एम. रेडियों	27 / 08 / 2018	पादप सुरक्षा
6.	रबी मौसम मे सब्जी उत्पादन	एफ. एम. रेडियों	28 / 09 / 2018	बागवानी
7.	रबी मौसम मे सब्जी की खेती	डी डी किसान	06 / 11 / 2018	बागवानी
8.	खाद्य प्रसंस्करण	डी डी किसान	26 / 11 / 2018	गृह विज्ञान
9.	मधुमक्खी पालन एवं उसका प्रसंस्करण	डी डी किसान	06 / 12 / 2018	पादप सुरक्षा

**कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों द्वारा बैठक, कार्यशाला में भागीदारी :**

क्र. सं	दिनांक	विषय	स्थान	संस्था / संस्थान
01	3 जुलाई, 2018	फसल अवशेष प्रबंधन पर कार्यशाला	नास कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
02	6–7 अगस्त, 2018	फार्म मशीनीरिज का रखरखाव एवं सुझाव पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	कृषि अभियांत्रिकी विभाग, पंजाब कृषि विश्व विद्यालय, लुधियाना	भारतीय कृषि अनुप्रयोग संस्थान, जोन-1 लुधियाना, पंजाब
03	10 अगस्त, 2018	दिल्ली व हरियाणा कृषि विज्ञान केन्द्रों की फसल अवशेष प्रबंधन पर कार्यशाला	चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा	भारतीय कृषि अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर (राज.)
04	30–31 अगस्त, 2018	युवाओं को कृषि की ओर प्रेरित और आकर्षित करने के लिए कार्यशाला का आयोजन	नास कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली	कृषि विज्ञान की प्रगति के लिए ट्रस्ट (TAAS) नई दिल्ली
05	20–22 सितम्बर, 2018	माली एवं सहायक गार्डनर का प्रशिक्षण कार्यक्रम (ASCI) के अंतर्गत	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर (राज.)	भारतीय कृषि अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2, जोधपुर
06	05–8 अक्टूबर, 2018	कृषि कॉनकेल्व	इंदिरा प्रतिष्ठान, लखनऊ	विज्ञान एवं पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार
07	22 अक्टूबर, 2018	कृषि नवाचार समिट 2018	नास कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली	—
08	11–12 नवम्बर 2018	कृषि मौसम पर सम्बंधी सलाह दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन	महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर	भारतीय मौसम विभाग एवं भारतीय कृषि अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2, जोधपुर (राज.)
09	26 नवम्बर 2018	राष्ट्रीय बागवानी अनु. एवं विकास प्रतिष्ठान की वार्षिक कार्यशाला	राष्ट्रीय बागवानी अनु. एवं विकास प्रतिष्ठान, नई दिल्ली	राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान जनकपुरी, नई दिल्ली
10	14–15 दिसम्बर 2018	कृषि विज्ञान केन्द्रों की दलहनी उत्पादन तकनीकी पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कम कार्यशाला का आयोजन	श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्व-विद्यालय जोबनेर जयपुर (राज.)	भारतीय कृषि अनुप्रयोग संस्थान जोन-2, जोधपुर (राज.)
11.	15 दिसम्बर 2018	आउट लुक कृषि कॉनकेल्व	नास कॉम्प्लेक्स नई दिल्ली	—
12.	30 दिसम्बर 2018	स्वच्छ धरा खेत हरा कार्यक्रम	नास कॉम्प्लेक्स नई दिल्ली	अमर उजाला एवं कृषि प्रसार विभाग, भा.कृ.अनु.व.

### कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के द्वारा प्रकाशन :-

फोल्डर / पैम्फलेट

- “कृषि मशीनों के द्वारा फसल अवशेष का प्रबन्धन” नामक फोल्डर किसानों को फसल अवशेष प्रबन्धन के बारे में जागरूक करने के लिये किया गया।
- “फसल अवशेष प्रबंधन का महत्व व जलाने के नुकसान” सम्बन्धित पैम्फलेट (प्रचार पुस्तिका) का प्रकाशन हुआ।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, के द्वारा प्रमुख प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं कृषि प्रसार गतिविधियाँ :-

क्र.सं.	प्रशिक्षण विषय	स्थान	माह	अवधि
1.	खरीफ सब्जी उत्पादन की नर्सरी तैयार करना	खरखेड़ी	जुलाई	एकद्विवर्षीय
2.	आम मे मुल्य संवर्धन	गुमनहेड़ा	जुलाई	तीनद्विवर्षीय
3.	गेंदा की नर्सरी तैयार करना	सारंगपुर	अगस्त	एकद्विवर्षीय
4.	धान मे एकीकृत कीट प्रबंधन	सारंगपुर	अगस्त	एकद्विवर्षीय
5.	खरीफ दलहन मे उच्च उत्पादन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन	काजीपुर	अगस्त	तीनद्विवर्षीय
6.	शुद्ध व साफ जल का उपयोग	दांसा	अगस्त	तीनद्विवर्षीय
7.	मूँग की फसल मे एकीकृत कीट प्रबंधन	के. वि. के. परिसर	सितम्बर	तीनद्विवर्षीय
8.	कम लागत एवं पोषक तत्वों का पोषण	झटीकरा	सितम्बर	तीनद्विवर्षीय
9.	सरसों की फसल मे संतुलित उर्वरकों का उपयोग	पण्डवाला कलाँ	अक्टूबर	तीनद्विवर्षीय
10.	रबी मौसम मे सब्जी उत्पादन की उच्च तकनीकी	बीजवासन	नवम्बर	एकद्विवर्षीय
11.	विदेशी सब्जियों की उच्च उत्पादन तकनीकी	मित्ताऊ	दिसम्बर	एकद्विवर्षीय
12.	कृषि महिलाओं की आय बढ़ाने के लिए कृषि गतिविधियाँ			तीनद्विवर्षीय

### व्यावसायिक प्रशिक्षण

क्र.सं.	प्रशिक्षण विषय	स्थान	माह	अवधि
1.	लैण्ड स्केपिंग एवं गार्डनिंग विषय	सी. आर. पी. एफ. कैंप झड़ौदा कलाँ	सितम्बर	सातद्विवर्षीय
2.	खाद्य प्रसंस्करण	के. वि. के. परिसर	नवम्बर	सातद्विवर्षीय
3.	मशरूम उत्पादन तकनीकी	सी. आर. पी. एफ. कैंप झड़ौदा कलाँ	नवम्बर से दिसम्बर	सातद्विवर्षीय
4.	माली (गार्डनर) विषय पर कौशल विकास प्रशिक्षण	के. वि. के. परिसर	दिसम्बर	सातद्विवर्षीय

### कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा पौधों मे बीमारियों का निदान, मृदा नमूना संग्रह परीक्षण एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण:-

क्र.सं.	प्रकार	नमूनों की संख्या	समस्या	निदान / सिफारिश
01.	पौधों मे बीमारियों की जांच	78	यलो मोजेक भिण्डी मे/ लोकी मे सफेद मकर्खी/धान मे बकानी/टमाटर मे आर्द्र गलन	बीमारियों के अनुसार आवश्यक निदान एवं सिफारिश
02.	मृदा स्वास्थ्य की जांच	70	कार्बनिक, जिंक व नाइट्रोजन की कमी	मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार जैविक व कार्बनिक उर्वरकों की सिफारिश

**कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा में किसानों के लिए उच्च गुणवता युक्त बीज एवं खाद उपलब्ध:-**

क्र.सं.	फसल	प्रजाति
1.	गेहूँ	एच. डी. 2967
2.	सरसो	पूसा विजय
3.	पालक	पूसा आलग्रीन
4.	सरसो साग	पूसा सरसो साग न. -1
5.	किचन गार्डन कीट	सब्जी बीज
6.	जैविक खाद	कंचुआ खाद
7.	मशरूम	स्पॉन / कम्पोस्ट
8.	एन. एच. आर. डी. एफ. ट्रोइकोवीर	ट्राइकोडर्मा विरीडी
9.	बायोब्रेम	बैवरिया वोतीयान्य

**कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के द्वारा उत्पादित एवं वितरण उत्पाद का वितरण:-**

क्र.सं.	उत्पाद		मात्रा	
01	फसल / सब्जी	किस्म	बीज के रूप	
	गेहूँ सरसो पालक सरसों (सब्जी के लिए)	एच डी - 2967 पुसा विजय ऑल ग्रीन पुसा साग	8794 कि. ग्रा。 395 कि. ग्रा。 2796 कि. ग्रा。 3520 कि. ग्रा。	— — — —
02	वर्मी कम्पोस्ट	603 कि. ग्रा。		603 कि. ग्रा。
03	मशरूम	—		—
04	हनी / शहद	40 कि. ग्रा.		40 कि. ग्रा.
05	किचन गार्ड किट	45 किट		45 किट
06	नर्सरी पौध	47 पौध		47 पौध
07	नेपियर घास	5500 कि. ग्रा.		5500 कि. ग्रा.
08	एन. एच. आर. डी. एफ. ट्रोइकोवीर	—		—
09	अन्य उत्पाद	3474 कि. ग्रा.		3475 कि. ग्रा.

**अन्य प्रसार गतिविधियाँ**

- 1. प्रक्षेत्र दिवस/किसान गोष्ठी
- 2. विधि प्रदर्शन
- 3. मृदा परीक्षण अभियान
- 4. बीज उपचार अभियान
- 5. के.वी.के. पर किसान भ्रमण
- 6. किसानों के खेत पर विशेषज्ञों का भ्रमण
- 7. महत्वपूर्ण दिवस का आयोजन
- 8. फिल्म प्रदर्शन, प्रदर्शनी, प्रकाशन/लेखन
- 9. ऐडियो, टी.वी. एवं समाचार पत्र
- 10. प्रदर्शनी, किसान मेला, सेमीनार एवं कृषक भ्रमण

**बुक पोस्ट (छ:मासिक मुद्रित सामग्री)**

यदि प्राप्त नहीं होने पर वापसी पता :

**डॉ० पी. के. गुप्ता**

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा,

नई दिल्ली-110073

दुरआश : 09667971155

ई-मेल : [kvkujwa@yahoo.com](mailto:kvkujwa@yahoo.com)

वेबसाइट : [www.kvkdelhi.org](http://www.kvkdelhi.org)

सेवा में,

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_